CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्री शिवाय नमः ॥

शिवमहिम्न

* स्तोत्रम् *

भाषा टीका सहितम्

॥ प्रकाशक ॥

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,

गाजादरवाजा, वाराणसी ।

फोन ६४६५० मूल्य ८० पैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवमहिम्न स्तोत्रम्

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी ।
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ॥
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामवधि गृणन् ।
ममाप्येष स्तोत्रे हर ! निरपवादः परिकरः ॥१॥

हे हर ! (सभी दुःखों के हरने वाले) आपकी महिमाके अन्त को जानने वाले मुझ अज्ञानी से की गई स्तुति यदि आपकी महिमा के अनुकूल न हो, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि ब्रह्मा आदि भी आपकी महिमा के अन्त को नहीं जानते हैं। अतः उनकी स्तुति भी आपके योग्य नहीं है। "स वाग् यथा तस्य गुणान् गृणीते" के अनुसार यथा मति मेरी स्तुति उचित ही है। क्योंकि—"नभः पतन्त्यात्मसमं पतत्रिणः" इस न्याय से मेरी स्तुति आरम्भ करना चाहिये ॥ १ ॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स कस्य स्तोतव्यः कतिविधिगुणः कस्य विषयः।
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥

हे हर ! आपकी निर्गुण और सगुण महिमा मन और वाणी के विषय से परे है जिसे वेद भी संकुचित होकर कहते हैं। अतः आपकी उस महिमाकी स्तुति करनेमें कौन समर्थ हो सकता है। तब भी अर्वाचीन (भक्तोंके अनुग्रहार्थ धारण किया हुआ नवीन) रूप भक्तों के मन और वाणी का विषय हो सकता है ॥२॥

मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवत-
स्तवब्रह्मन्किंवागपि सुरगुरोर्विस्मय पदम् ॥
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः।
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥

हे ब्रह्मन् ! जब कि आपने मधु के सदृश मधुर और अमृतके सदृश जीवनदायिनी वेदरूपी वाणी को प्रकाशित किया है, तब ब्रह्मादि से की गई स्तुति आपको कैसे प्रसन्न कर सकती है ? हे त्रिपुरमथन ! जब ब्रह्मादि भी आपकी स्तुति गान करनेमें समर्थ नहीं हैं, तब मुझ तुच्छकी क्या सामर्थ्य है। मैं तो केवल आपके गुण-गान से अपनी वाणीको पवित्र करनेकी इच्छा करता हूँ ॥३॥

तवैश्वर्यं तत्तज्जगदुदयरक्षा प्रलयकृत्।
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासुतनुषु ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीम् ।
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥४॥

हे वरद ! (वर देने वाले) आपके ऐसे ऐश्वर्य का जो संसारकी सृष्टि, रक्षा तथा प्रलय करने वाला है, तीनों वेदों से गाया हुआ है, तीनों गुणों (सत्, रज, तम) से परे है, तीनों शक्तियों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में व्याप्त है, कुछ नास्तिक अनुचित निन्दा करते हैं । इससे उन्हींका अधःपतन होता है न न कि आपके यश का ॥ ४ ॥

किमीहः किङ्कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनम् ।
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ॥
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः ।
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥

"अचिन्त्याः खलु ये भावा न तांस्तर्केण योजयेत्" के अनुसार कल्पनासे बाहर, अपनी अलौकिक मायासे सृष्टि करने वाले आपके ऐश्वर्य के विषयमें नास्तिकों को यह (वह ब्रह्म सृष्टि करता है, किन्तु उसकी इच्छा, शरीर सहकारी कारण आधार और समवायि कारण क्या है ?) कुतर्क जगत्के कतिपय मन्द मति वालों को भ्रान्ति के लिये वाचक करता है ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ॥
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतोमन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥

हे अमर वर ! (देवश्रेष्ठ) यह सावयव लोक अवश्य ही जन्य है तथा इसका कर्ता भी कोई न कोई है परन्तु वह कर्ता आपके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं हो सकता क्योंकि इस विचित्र संसारकी विचित्ररचना की सामग्री ही दूसरेके पास असम्भव है । इसलिये अज्ञानी लोग ही तुम्हारे विषय में सन्देह करते हैं ॥६॥

त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति ।
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ॥
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां ।
नृमाणेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥

हे अमरवर ! वेदत्रयी, सांख्य, योग, शैव मत और वैष्णव मत ऐसे भिन्न-भिन्न मतों में कोई वष्णव मत और कोई शैव मत अच्छाकहते हैं, रुचि की विचित्रतासे टेढ़े सीधे मार्ग में प्रवृत्त हुए मनुष्यों को अन्त में एक आप ही साक्षात् या परम्परया प्राप्त होते हो, जैसे नदियाँ टेढ़ी-सीधी बहती हुई साक्षात् या परम्परा से समुद्र में ही मिलती हैं ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महोक्षः खट्वाङ्गम्परशुरजिनं भस्म फणिनः ।
कपालंचेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रू प्रणिहिताम् ।
न हि स्वात्मारामं विषय मृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥

हे वरद! महोक्ष (बैल), खटिया का पाया, परशु, गजचर्म, भस्म, सर्प, कपाल इत्यादि आपकी धारण सामग्रियाँ हैं, परन्तु उन ऋद्धियोंको जो आपकी कृपासे प्राप्त देवता लोग भोगते हैं, आप क्यों नहीं भोगते! स्वात्माराम (आत्मज्ञानी) को विषय (रूपरसादि) रूपी मृगतृष्णा नहीं भ्रमा सकती हैं ॥ ८ ॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वद्ध्रुवमिदम् ।
परोध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ॥
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव ।
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

हे पुरमथन! सांख्य मतानुयायी "नह्यसत उत्पत्तिः सम्भवति" के अनुसार जगत्को ध्रुव (नित्य), बुद्धिमतानुयायी अध्रुव (क्षणिक) तार्किकजन नित्य (आकाश आदि पञ्च और पृथिव्यादि परमाणु और अनित्य कार्यद्रव्य) दोनों मानते हैं। इन मतान्तरों से विस्मित मैं भी आपकी स्तुति करता हुआ लज्जित नहीं होता, क्योंकि वाचालता लज्जा को स्थान नहीं देती ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरिविरञ्चिर्हरिरधः ।
परिच्छेत्तुं यातावनलमनिलस्कन्धवपुषः ॥
ततोभक्ति श्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत् ।
स्तवं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥१०॥

हे गिरीश (गिरि में शयन करनेवाले), तेजपुंज आपकी विभूतिको ढूँढ़नेके लिए ब्रह्मा आकाश तक और विष्णु पाताल तक जाकर भी उसे पानेमें असमर्थ रहे, तत्पश्चात् उनकी कायिक, मानसिक और वाचिक सेवासे प्रसन्न होकर आप स्वयं प्रकट हुए इससे यह निश्चय है कि आपकी सेवासे ही सब सुलभ है ।१०।

अयत्नादापाद्यत्रिभुवनमवैरव्यतिकरम् ।
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ॥
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः ।
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥

हे त्रिपुरहर ! मस्तकरूपी कमलकी मालाको जिस रावणने आपके कमलवत् चरणों में अर्पणकर के त्रिभुवनको निष्कण्टक बनाया था तथा युद्धके लिए सर्वदा उत्सुक रहनेवाली भुजाओंको पाया था, वह आपकी अविरल भक्तिका ही परिणाम था ॥११॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनम् ।
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौविक्रमयतः ॥
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि ।
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितोमुह्यति खलः॥१२॥

रावणने उन्हीं भुजाओंसे जिन्होंने आपकी सेवा से बल प्राप्त किया था, आपके घर कैलास को उखाड़नेके लिए हठात् प्रयोग करते ही आपके अँगूठे के अग्र भाग के संकेत मात्र से पाताल में गिरा, निश्चय ही खल उपकारको भूल जाते हैं ॥१२॥

यद्दृप्त सुत्राम्णो वरद ! परमोच्चैरपि सती- ।
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः ॥
नतच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरित्वच्चरणयोः ।
न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥

हे वरद ! बाणासुर ने आपको नमस्कार मात्र से इन्द्र की सम्पत्तिको नीचा दिखलाने वाली सम्पत्ति प्राप्त किया था और त्रिभुवनको अपना परिजन बना लिया था । यह आश्चर्यकी बात नहीं है क्योंकि आपके चरणोंमें नमस्कार करना किस उन्नति का कारण नहीं होता है ॥ १३ ॥

अकाण्ड ह्माण्ड क्षयचकितदेवासुरकृपा ।
विधेयस्याऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
त्रिकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः।१४।

हे त्रिनयन! सिन्धु विमंथन से उत्पन्न कालकूट से अक्षमय में ब्रह्माण्ड के नाश से डरे हुए सुर व असुरों पर कृपा करके एवं संसार को बचाने की इच्छा से उसको (काल कूट को) पान करने से आपके कण्ठ की कालिमा भी शोभा देती है। ठीक ही है, जगत् के उपकार की कामना वाले दूषण भूषण समझे जाते हैं ॥ १४ ॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे।
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ॥
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्।
स्मरःस्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः।१५।

जो विजयी कामदेव अपने बाणों द्वारा जगत्के देव, मनुष्य और राक्षसों को जीतने में सर्वथा समर्थ रहा, वही कामदेव अन्य देवों के समान आपको भी समझा, जिससे वह स्मरण मात्र के लिये ही रह गया (दग्ध हो गया), जितेन्द्रियों का अनादर करना अहितकारक ही होता है ॥ १५ ॥

मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदम्।
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा ।
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥

हे ईश ! आप जगत् की रक्षा के लिए राक्षसों को मोहित करके नाशके लिए नृत्य करते हो तब भी संसार का आपके ताण्डव से दुःख दूर होता है क्योंकि आपके चरणों के आघात से पृथ्वी धँसने लगती है, विशाल बाहुओं के संघर्ष से नक्षत्र आकाश पीड़ित हो जाता है तथा आपकी चञ्चल जटाओं से ताड़ित हुआ स्वर्ग लोक भी कम्पायमान हो जाता है । ठीक ही है उपकार भी किसी के लिए अहितकारक हो जाता है।१६।

वियद्व्यापोतारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः ।
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ॥
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः ॥१७॥

हे ईश ! तारा गणों की कान्ति से अत्यन्त शोभायमान आकाश में व्याप्त तथा भूलोक को चारों ओर से घेरकर जम्बूद्वीप बनाने वाला गङ्गा का जल-प्रवाह आपके जटाकपाल में बूँद से भी लघु देखा जाता है । इतने से ही आपके दिव्य तथा श्रेष्ठ शरीर की कल्पना की जा सकती है ॥ १७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिनगेन्द्रो धनुरथा-
रथाङ्गेचन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ॥
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥१८॥

हे ईश ! तृण के समान त्रिपुर को जलाने के लिए पृथ्वी को रथ, ब्रह्माको सारथी, हिमालय को धनुष, सूर्य-चन्द्रको रथका चक्र तथा विष्णुको विषधर बाण बनाना आपका आडम्बर मात्र है। विचित्र वस्तुओं से क्रीडा करते हुए समर्थों की बुद्धि स्वतंत्र होती है ॥ १८ ॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥

हे त्रिपुरहर ! विष्णु आपके चरणोंमें प्रति दिन सहस्र कमलों का उपहार देते थे। एक दिन एक की कमी होने के कारण उन्होंने अपने एक कमलवत् नेत्रको निकाल कर पूरा किया। यह भक्ति की परम सीमा चक्र के रूप में आज भी संसार की रक्षा किया करती है ॥ १९ ॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमताम्।
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलतिपुरुषाराधनमृते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवम् ।
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

हे त्रिपुरहर ! आपही को यज्ञ के फल का दाता समझ कर, वेद में दृढ़ विश्वास कर मनुष्य कर्मों का आरम्भ करते हैं । क्रिया रूप यज्ञ के समाप्त होने पर आपही फल देने वाले रहते हैं । आपकी आराधना के बिना नष्ट कर्म फलदायक नहीं होता ॥ २० ॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

हे शरणद ! कर्मकुशल यज्ञपति दक्ष के यज्ञ के ऋषिगण ऋत्विज, देवता सदस्य थे । फिर भी यज्ञके फल देनेवाले आप की अप्रसन्नता से वह ध्वंस हो गया । निश्चय है आप में श्रद्धा रहित किया गया यज्ञ नाश के लिए ही होता है ॥ २१ ॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरम् ।
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ॥
धनुःपाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुम् ।
त्रसन्तन्तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥

हे नाथ ! काल से प्रेरित मृगरूप धारण किये ब्रह्मा के भय

Nepal Sanskrit University, Balmeekl Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से मृगीरूपी धारण करने वाली अपनी कन्या में आसक्त देख, आपका उनके पीछे छोड़ा गया बाण आर्द्रा आज भी नक्षत्र रूप में मृगशिरा (ब्रह्मा) के पीछे वर्तमान है ॥ २२ ॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत् ।
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वापुरमथन पुष्पायुधमपि ॥
यदिस्त्रैणं देवो यमनिरतदेहार्ध-घटनाद् ।
अवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥

हे यम नियम वाले त्रिपुरहर ! आपकी कृपा से आपका अर्धस्थान प्राप्त करने वाली, अपने सौन्दर्य रूपी धनुष को धारण करने वाले कामदेव को जरा हुआ देखकर भी यदि पार्वती आपको अपने अधीन समझें तो ठीक ही है, क्योंकि प्रायः युवतियाँ ज्ञानहीन होती हैं ॥ २३ ॥

स्मशानेष्वाक्रीडास्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ॥
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलम्
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४॥

हे स्मरहर ! आपका स्मशान में क्रीडा करना, भूत-प्रेत-पिशाचादि को साथ रखना, शरीर में चिता के भस्म का लेपन करना तथा नर मुण्डों की माला पहिनना आदि वीभत्स कर्मोंसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यद्यपि आपका चरित अमंगल है तथापि स्मरण करने वालों को हे वरद ! आप परम मंगलरूप हैं ॥ २४ ॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः ।
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिल्लोत्सङ्गितदृशः ॥
यदालोक्याह्लादं हद इव निमज्ज्यामृतमये ।
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥२५॥

हे वरद ! जिस प्रकार अमृतमय सरोवर में अवगाहन से (स्नान करने से) प्राणिमात्र तापत्रय से मुक्त हो जाते हैं, उसी प्रकार इन्द्रियों से पृथक् करके मन को स्थिर कर, विधि पूर्वक प्राणायाम से, पुलकित तथा आनन्दाश्रु से युक्त योगीजन ज्ञानदृष्टि से जिसे देखकर परमानन्द का अनुभव करते हैं, वह आपही हैं ॥ २५ ॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वहुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योमत्वमुधरणिरात्मा त्वमिति च ॥
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतिगिरम् ।
न विद्मस्तत्तत्त्वंवयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥

हे वरद, आपके विषय में ज्ञानीजनों की यह धारणा है "क्षिति हुत वह क्षेत्रज्ञाम्भः प्रभंजन चन्द्रमस्तपनवियदित्येष्टो मूर्तिर्नवोभवविभ्रते ।" इस श्रुति के अनुसार सूर्य, चन्द्रमा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायु, अग्नि, जल, आकाश, पृथ्वी और आत्मा भी आपही हैं, किन्तु मेरे विचार से ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहाँ आप न हों ॥ २६ ॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तिस्त्रिभुवनमथोत्रीनपिसुरा ।
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृतिः ॥
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः ।
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ।२७।

हे शरणद ! व्यस्त [अ, उ, म,] 'ॐ' पद, शक्ति द्वारा तीन वेद [ऋग्, यजुः और साम], तीन वृत्ति [जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति], त्रिभुवन [भूर्भुवः स्वः] तथा तीनों देव [ब्रह्मा, विष्णु, महेश],इन प्रपञ्चों से व्यस्त आपका बोधक है और समस्त 'ॐ' पद, समुदाय शक्तिसे सर्व विकार रहित अवस्थात्रयसे विलक्षण अखण्ड, चैतन्य आपको सूक्ष्म ध्वनि से कहता है ॥ २७ ॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ॥
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देवः श्रुतिरपि ।
प्रियायास्मैधाम्नेप्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥

हे देव ! भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, महादेव, भीम और ईशान यह जो आपके नाम का अष्टक है, इस प्रत्येक नाममें वेद और देवतागण [ब्रह्मा] आदि विहार करते हैं, इसलिये ऐसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रियधाम [आश्रय भूत] आपको मैं बार-बार नमस्कार करता हूँ ॥ २८ ॥

नमोनेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो ।
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ॥
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमः ।
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥२९॥

हे प्रियदेव ! [निर्जन वन-विहरण शील], नेदिष्ठ [अत्यन्त समीप], दविष्ठ [अत्यन्त दूर], क्षोदिष्ठ [अति सूक्ष्म], महिष्ठ [महान्], वर्षिष्ठ [अत्यन्त वृद्ध], यविष्ठ [अतियुवा], सर्व-स्वरूप और अनिर्वचनीय आपको नमस्कार है ॥ २९ ॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः ।
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ॥
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः ।
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥

हे शिवजी ! जगत् की उत्पत्ति के लिये परम रजोगुण धारण किये भव [ब्रह्मा] रूप आपको बार-बार नमस्कार है और उस जगत्के संहार करनेमें तमोगुण को धारण करने वाले हर [रुद्र], आपके लिए पुनः-पुनः नमस्कार है, जगत् के सुख के लिए सत्त्व गुण को धारण करने वाले मृड (विष्णु),

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपको बार-बार नमस्कार है। तीनों गुणों (सत्त्व, रज, तम) से परे जो अनिर्वचनीय पद से विशिष्ट आपको बार-बार नमस्कार है ॥ ३० ॥

कृशपरिणतिचेतः क्लेशवश्यं क्व चेदम् ।
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनीशश्वदृद्धिः ॥
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
द्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥३१॥

हे वरद ! कहाँ तो रागद्वेष आदि से कलुषित तथा तुच्छ मेरा मन कहाँ आपकी अपरिमित विभूति, तिसपर भी आपकी भक्तिने मुझे निर्भय बनाकर इस वाक्‌रूपी पुष्पाञ्जलिको आपके चरण-कमलों में समर्पण करने के लिये बाध्य किया है ॥३१॥

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे ।
सुरतरुवरशाखा लेखनीपत्रमुर्वी ॥
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम् ।
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥

हे ईश ! असित अर्थात् काले पर्वत के समान कज्जल (स्याही) समुद्र-पात्र में हो, सुरवर (कल्पवृक्ष) के शाखा की उत्तम लेखनी हो और पृथ्वी कागज हो उन साधनों को लेकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वयं शारदा सर्वदा ही लिखती रहें तथापि आपके गुणों का पार नहीं पा सकतीं, तो मैं कौन हूँ ॥ ३२ ॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥

असुर, सुर और मुनियों से पूजित तथा विख्यात महिमा वाले ऐसे ईश्वर चन्द्रमौलि के इस स्तोत्र को अलघुवृत्त अर्थात् बड़े [शिखरिणी] वृत्त में सकल गुण श्रेष्ठ पुष्पदंत नामक गन्धर्व ने बनाया ॥ ३३ ॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्-
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च ॥३४॥

शुद्धचित्त होकर अनवद्य महादेवजी के स्तोत्रको जो पुरुष प्रतिदिन परम भक्ति से पढ़ता है । वह इस लोक में धन-धान्य, आयुयुक्त, पुत्रवान् और कीर्तिमान होता है और अंतमें शिव-में शिवस्वरूप हो जाता है ॥ ३४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३५॥

महादेवजी से श्रेष्ठ कोई देव नहीं, महिम्न से श्रेष्ठ कोई स्तोत्र नहीं, अघोर मंत्र से श्रेष्ठ कोई मंत्र नहीं और गुरु से श्रेष्ठ कोई तत्त्व (पदार्थ) नहीं ॥ ३५ ॥

दीक्षादानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नस्तव पाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३६॥

दीक्षा, दान, तप, तीर्थादि तथा ज्ञान और यागादि क्रियाएँ इस शिवमहिम्नस्तोत्र के पाठ की सोलहवीं कला को भी नहीं प्राप्त कर सकती हैं ॥ ३६ ॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्-
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३७॥

पुष्पदंत नामके सभी गंधर्वों के राजा, भाल में चन्द्रमा को धारण करनेवाले देवताओंके देव महादेवजी के दास थे, वे सुरगुरु महादेवजी के क्रोध से अपनी महिमा से भ्रष्ट हुए तब शिव के प्रसन्नार्थ इस परम दिव्य शिवमहिम्न स्तोत्र को बनाये ॥३७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुम्
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेतः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३८॥

यह पुष्पदंत का बनाया हुआ अमोघ स्तोत्र कैसा है कि—सुरवर मुनियों से पूज्य और स्वर्ग तथा मोक्ष का कारण है। इसे ज। मनुष्य अनन्य चित्त से हाथ जोड़कर पढ़ता है वह किन्नरों द्वारा स्तुति किया हुआ शिवजी के समीप जाता है॥ ३८॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥ ३९॥

सावधान होकर श्रीपुष्पदंत के मुख से निकले हुए पाप-हारी तथा महादेवजी के प्रिय इस स्तोत्र को कण्ठ कर पाठ करने से प्राणीमात्रके स्वामी श्रीमहादेवजी प्रसन्न होते हैं॥ ३९॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्॥ ४०॥

अनुपम और मनको हरने वाला ईश्वर वर्णनात्मक पवित्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तोत्र पुष्पदंत गंधर्व का कहा हुआ समाप्त हुआ ॥४०॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥४१॥

हे महेश्वर ! मैं नहीं जानता कि आप कैसे हैं । आप चाहे जैसे हों आपके लिये मेरा नमस्कार है ॥ ४१ ॥

एकाकालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ॥ ४२ ॥

प्रातःकाल या दोपहर या सायंकाल में या तीनों काल में जो आपकी महिमा का गान करेगा वह सब पापों से छूटकर आपके लोक में सुखपूर्वक निवास करेगा ॥४२॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥४३॥

इस प्रकार इस वाङ्मयी पूजा को मैं श्रीशङ्करजी के चरणों में अर्पण करता हूँ जिससे महादेवजी मुझपर प्रसन्न रहें ॥४३॥

इति श्रीभाषाटीकोपेतं शिवमहिम्नस्तोत्रं समाप्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ रावण कृत--

शिवताण्डव-स्तोत्रम्

रावणारिं नमस्कृत्य भक्तानामभयङ्करम्
रावणस्य कृतेः कुर्वे भाषाटीकां सुखावहाम् ॥ १ ॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ १ ॥

भावार्थ---तण्डव नृत्य के समय जटारूपी कूप में वेग से घूमती हुई भागीरथी की चञ्चल तरङ्गरूपी लताओं से शोभायमान और धक्क धक्क शब्द सहित जलनेवाली है अग्नि जिसमें ऐसे ललाटवाले तथा द्वितीया के चन्द्रमारूपी आभूषण को धारण करनेवाले श्रीमहादेवजी के विषे मेरी प्रतिक्षण प्रीति होवे ॥ १ ॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयम्,
चकारचण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषार्थ—लंकापति रावण अभीष्ट सिद्धि के निमित्त श्री शंकरजी महाराज से प्रार्थना करता है, कि जो श्रीमहादेवजी के जटारूपी वन से गिरते हुए जल के प्रवाह से पवित्र कण्ठ में बड़े-बड़े सर्पों की माला को लटका कर डमडम शब्द करनेवाले डमरू को बजाते हुए ताण्डव (नृत्य) करते हैं वह श्री महादेवजी हमारा मंगल करें ॥ २ ॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३ ॥

भाषार्थ—पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के क्रीड़ाके बान्धव और अति रमणीय प्रकाशमान कृपा-कटाक्षों से भक्तों की घोर आपत्ति को दूर करनेवाली वाणी से नग्नरूप श्री महादेव-जी के विषे मेरा मन आनन्द को प्राप्त होवे ॥ ३ ॥

जटाभुजंगपिंगलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनोविनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषार्थ—जब नृत्य करने के समय जटाओं में विराजमान सर्पों के फणों व मणियों की चमकती हुई पीली कांति फैलती है और दिशायें पीली हो जाती हैं तब ऐसा प्रतीत होता है मानो शिवजी ने दिग्वनिताओं के मुखपर केसर मल दिया, ऐसे और मद से अन्ध हो गजासुर उसके चर्म को ओढ़कर परमशोभा को प्राप्त होनेवाले श्रीमहादेवजी के विषे मेरा मन परम आनन्द को प्राप्त होवे ॥ ४ ॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरम्
महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु नः ॥५॥

भाषार्थ—जिन्होंने अपने मस्तकरूप आंगन में धक्-धक् जलते हुए अग्नि के कण से कामदेव को भस्म कर दिया, जिनको ब्रह्मा आदि देवताओं के अधिपति भी प्रणाम करते हैं, जिनका विशाल भाल चन्द्रमा की किरणों से विराजमान रहता है और जिनकी जटाओं में कल्याणकारिणी श्रीगङ्गाजी निवास करती हैं ऐसे कपालधारी तेजो मूर्ति सदाशिव हमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों सम्पत्ति देवें ॥ ५ ॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिरायजायताञ्चकोरबन्धुशेखरः ॥६॥

भाषार्थ—जिन महादेवजी के चरण धरने से भूमि, इन्द्रादि देवताओं के मुकुटों की पुष्पमालाओं से गिरी हुई पराग से धूसर (मटमैली) रहती है, जिनका जटाजूट सर्पराज वासुकी-के लपेटों से बँध रहा है और जिनके विशाल भाल में चन्द्रमा विराजमान हैं ऐसे सदाशिव हमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूपी सम्पत्ति देवें ॥ ६ ॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७॥

भाषार्थ—जिन महादेवजी ने अपने कराल भालरूपी मैदान में धधकती हुई अग्नि में प्रबल कामदेव की आहुति दे दिया। जो हिमालय कुमारी श्रीपार्वतीजी के स्तनों पर चित्र-कारी करने में परम प्रवीण हैं ऐसे त्रिलोचन महादेवजी में मेरी प्रीति होवे ॥ ७ ॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्-
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसुन्दरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः॥८॥

भाषार्थ—अमावास्या की अर्धरात्रि के समय स्वयं ही अन्धकार अधिक होता है और यदि उस समय नवीन मेघमण्डल घिर आवें तो और भी अधिक अन्धकार हो जाता है ऐसे घोर अन्धकार का भी जिनकी ग्रीवा निरादर करती है अर्थात् उस अन्धकार से भी अधिक काली है ऐसे गंगाधर हस्ती के चर्म को ओढ़नेवाले चन्द्रमौलि त्रिलोका के पालन करनेवाले सदाशिव हमारी सम्पदा को अधिक करें ॥ ८ ॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं-
गजच्छिदान्धकच्छिदंतमन्तकच्छिदंभजे॥९॥

भाषार्थ—जिनके सुन्दर कण्ठ की परम रमणीय शोभा खिले हुए नील कमल की भाँति चारों ओर फैली हुई नील वर्ण की कान्ति का निरादर करती है, ऐसे कामदेव को भस्म करनेवाले त्रिपुरारि दक्षयज्ञध्वंसकारी गजासुर संहारी अन्धकासुर के नाशक कालान्तक शिवजी को मैं भजता हूँ ॥ ९ ॥

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकन्तमन्तकान्तकं भजे ॥१०॥

भाषार्थ—सब प्रकार के मंगलों को अधिकता से देनेवाले, चौंसठ कलारूपी कदम्ब के वृक्ष की मंजरी का रस पीनेवाले अर्थात् सर्वकलाप्रवीणकामारि त्रिपुरारि भक्त-भयहारी दक्षयज्ञ विध्वंसकारी गजासुरसंहारी अन्धकासुर के प्राण हरण करनेवाले और काल का भय मिटानेवाले महादेवजी का मैं भजन करता हूँ ॥ १० ॥

जयत्यदभ्रविभ्रमस्फुरद्भुजंगमश्वसद्-
विनिर्गमक्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिन्धिमिन्धिमिन्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमंगल-
ध्वनिक्रमप्रवर्त्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ ११ ॥

भाषार्थ—नृत्य करते समय अधिक वेग से घूमने पर शिर में लिपटे हुए सर्पों के श्वास के निकलने से और भी अधिक प्रज्वलित हुई है कराल भाल की अग्नि जिनकी और मृदंग की धिमिं धिमिं मङ्गलध्वनि की वृद्धि के अनुसार अपने ताण्डव नृत्य की गति को बढ़ानेवाले शिवजी महाराज की जय होवे ॥ ११ ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकःकदा सदा शिवं भजाम्यहम्॥१२॥

भाषार्थ-वह कौन-सा शुभ समय होगा कि जिस समय पर मैं पत्थर और पुष्पों की शय्या में, सर्प और मोतियों की मालामें, बहुमूल्यरत्न और मृत्तिका के ढेलों में, शत्रु और मित्र में, तृण और नीलकमल के समान नेत्रवाली स्त्री में तथा प्रजा व चक्रवर्ती राजा में एक दृष्टि करके सदाशिव का भजन करूँगा ॥ १२ ॥

कदानिलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमञ्जलिं वहन्।
विमुक्तलोललोचनो ललामभालल्गनकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन्सदा सुखी भवाम्यहम्॥१३॥

भाषार्थ-वह कौन-सा कल्याणकारक समय होगा कि जिस समय पर मैं सम्पूर्ण दुर्वासनाओं का त्याग कर गङ्गातट की कुञ्ज के विषय निवास करके शिर पर अंजालि बाँधता हुआ चञ्चल नेत्र वाली स्त्रियोंमें रत्नरूप जगज्जननी श्रीपार्वतीजी को भी प्रारब्धवश प्राप्त हुए अर्थात् औरों को परम दुर्लभ शिव-शिव मन्त्र का उच्चारण करता हुआ परम आनन्द को प्राप्त होऊँगा ॥१३॥

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका
निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तनोतु नो मनो मुदं विनोदिनीमहर्निशं
परःश्रियः परम्पदन्तदङ्गजत्विषाञ्चयः ॥१४॥

भाषार्थ–इन्द्रनगरी की अप्सराओं के शिर से गिरी हुई निवारी के पुष्पों की मालाओं के पराग की उष्णता से उत्पन्न हुए पसीने से शोभायमान, परमशोभा के सर्वोपरि स्थान और रात दिन आनन्द देनेवाला जो सदाशिव के शरीर की कांति का समूह है वह हमारे मनके आनन्द को बढ़ावे ॥१४॥

प्रचण्डवाडवानल प्रभाशुभप्रचारिणी
महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना ।
विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः
शिवेतिमंत्रभूषणा जगज्जयायजायताम् ॥ १५ ॥

भाषार्थ–भयदायक बड़वानल के अग्नि की प्रभाके समान अमंगलों का नाश करनेवाले, अष्टसिद्धियों के सहित स्त्रियाँ जो गीत गाती हैं और शिव-शिव यह मन्त्र ही है भूषण जिसका ऐसी स्वयंमुक्तभाव जगत् की माता पार्वतीजी के विवाह के समय की ध्वनि संसार की जयकारिणी होवे ॥ १५ ॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरांयगजेन्द्र तुरंगयुक्ता लक्ष्मीं सदैवसुमुखीप्रददाति शम्भुः ॥

उन्नाव मण्डलस्थबरौड़ाग्रामनिवासी पं० आनन्दमाधव-
दीक्षितात्मज पण्डित महाराजदीनदीक्षित कृत
भाषाटीकासहितं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासकृत-शिवस्तुति

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहम्
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयम्
गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकालकालं कृपालुम्
गुणागारसंसारपारं नतोऽहम्।
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरम्
मनोभूतकोटिप्रभा श्रीशरीरम्।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगङ्गा
लसद्भालबालेन्दुकण्ठे भुजंगा।
चलत्कुण्डलं शुभ्रू त्रिनेत्रं विशालम्
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालुम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालम्
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अखण्डं अजं भानु कोटि प्रकाशम् ।
त्रयः शूलनिर्मूलिनं शूलपाणिम्
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ।
कलातीत-कल्याण-कल्पान्तकारी ।
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारीः ।
चिदानन्द सन्दोह महोपहारी ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारीः ।
न यावत् उमानाथ-पादारविन्दम्
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति-सन्तापनाशम्
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ।
न जानामि योगं जपं नैव पूजाम्
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जराजन्म - दुःखौघतातप्यमानम्
प्रभो पाहि शापान्नमामीशशम्भो ।
श्लोकः—रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।

इति श्रीतुलसीदासकृतं रुद्राष्टकं सम्पूर्णम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* पशुपति-अष्टकम् *

श्रीगणेशाय नमः ॥ पशुपतीन्दुपतिं धरणीपतिं भुजगलोकपतिं च सतीपतिम् । प्रणतभक्तजनार्तिहरं परं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ॥ १ ॥ न जनको जननी न च सोदरो न तनयो न च भूरिबलं कुलम् । अवति कोऽपि न कालवशं गतं भजत० ॥ २ ॥ मुरजडिण्डिमवाद्यविलक्षणं मधुरपञ्चमनादविशारदम् ॥ प्रमथभूतगणैरपि सेवितं भज० ॥ ३ ॥ शरणदं सुखदंशरणान्वितं शिव शिवेति शिवेति नतं नृणाम् । अभयदं करुणावरुणालयं भज० ॥ ४ ॥ नरशिरोरचितं मणिकुण्डलं भुजगहारयुदं वृषभध्वजम् । चितिरजोधवलीकृतविग्रहं भज० ॥ ५ ॥ मखविनाशकरं शशिशेखरं सततमध्वरभाजिफलप्रदम् । प्रलयदग्धसुरासुरमानवं भज० ॥ ६ ॥ मदमपास्य चिरं हृदि संस्थितं मरणजन्मजराभयपीडितम् । जगदुदीक्ष्य समीपभयाकुलं भज० ॥ ७ ॥ हरिविरञ्चिसुराधिपपूजितं यमजनेशधनेशनमस्कृतम् । त्रिनयनं भुवनत्रितयाधिपं भज० ॥ ८ ॥ पशुपतेरिदमष्टकमद्भुतं विरचितं पृथ्वीपतिसूरिणा । पठति संशृणुते मनुजः सदा शिवपुरीं वसते लभते मुदम् भज० ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीपशुपति-अष्टकं सम्पूर्णम् ॥

❀

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

* शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् *

श्रीगणेशाय नमः ॥ नागेन्द्राहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय। नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥ १ ॥ मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय। मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥ २ ॥ शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय। श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥ ३ ॥ वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय। चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥ यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय। दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥ पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ। शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ६ ॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुक्सेलर

राजादरवाजा, वाराणसी।

मुद्रक—उर्मिला प्रिंटिंग प्रेस, मीरापुर बसहीं, वाराणसी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारे यहाँ की नीचे लिखी मन पसन्द पुस्तकें

एकबार मँगाकर लाभ उठावें।

बृहद्पाराशर होराशास्त्र	१४)		
भृगुसंहिता फलितसर्वाङ्ग दर्शन	३६)		
कर्मविपाकसहिता भाषा टीका	१५)		
सचित्र सामुद्रिक रहस्य भाषा टीका	१२)		
भाव कौतुहल भाषा टीका	१५)		
सामुद्रिक कुञ्जिका भाषा टीका	५)		
मानस गो भा.टी.	२८)	गृहरत्नभूषण भा. टी.	५)
रमलदिवाकर ,,	१६)	वास्तु प्रबोध ,,	५)
ताजिक नीलकंठी ,,	१४)	लग्नचन्द्रिका ,,	८)
जातकाभरण ,,	१०)	जन्मपत्र प्रबोध ,,	१)
बृहद्ज्योतिषसार ,,	१५)	शीघ्रबोध ,,	३)
बृहज्जातक ,,	३०)	सामुद्रिक रहस्य ,,	१२)
प्रश्नविद्याप्रतिष्ठार्णव	५०)	शिवस्वरोदय ,,	४)
विवाहदाम्पत्यनिर्णय	८)	हनुमान ज्योतिष	२)
घाघभड्डरी की कहावतें	५)	स्वरसिद्धि	५)
,, ,, ,, छोटा	२)	जन्माक्षर	२)

इस प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर

राजादरवाजा, वाराणसी।

स्वतन्त्र भारत प्रेस, वाराणसी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu